CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शिव चालीसा

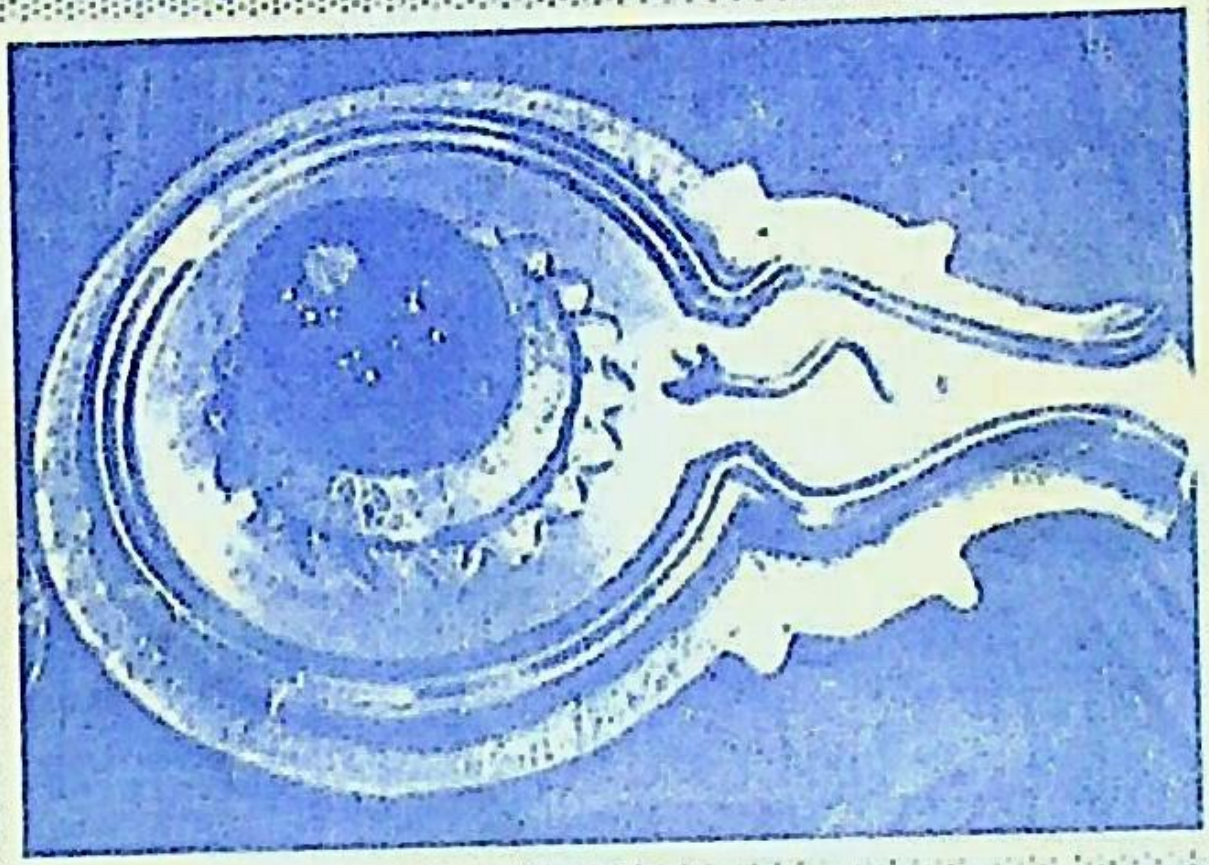

श्री संङ्गमेश्वराय महादेव के साक्षात दर्शन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्री नीलकंठ महादेव के साक्षात दर्शन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री सङ्गमेशवराय नमः

अथ शिव चालीसा

श्री गणेश गिरिजा सुवन मंगल मूल सुजान ।
कहत अयोध्यादास तुम देहु अभय वरदान।।

जय गिरिजापति दीन दयाला ।
सदा करत सन्तन प्रतिपाला ।
भाल चन्द्रमा सोहत नीके ।
कानन कुण्डल नागफनी के ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अग गौर शिर गग बहाये ।
मुण्डमाल तन छार लगाये ।।
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे ।
छवि को देख नाग मुनि मोहे ।।
मैना मातु की हवे दुलारी ।
बाम अंग सोहत छवि भारी ।।
कर त्रिशूल सोहत छवि भारी ।
करत सदा शत्रुण क्षयकारी ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नन्दि गणेश सोहैं तहँ कैसे ।।
सागर मध्य कमल हैं जैसे ।।
कीर्तिन श्याम और गणराऊ ।
या छवि को कहि जात ना काऊ ।।
देवन जबहीं जाय पुकारा ।
तबहीं दुःख प्रभु आप निवारा ।।
किया उपद्रव तारक भारी ।
देवन सब मिली तुमहिं जुहारी ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तुरत षडानन आप पाठायउ ।
लव निमेष महँ मारि गिरायउ ।।
आप जलन्धर असूर सहारा ।
सुयश तुम्हार विदित संसार ।।
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई ।
सबहिं कृपा कर लीन बचाई ।।
किया तपहिं भागीरथ भारी ।
पूरब प्रतिज्ञा तासु पुरारी ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दानिन महँ तुम सम कोउ नाहीं।
सेवक स्तुति करत सदाही ।।
वेद नाम महिमा तव गाई।
अकथ अनादि भेद नहिं पाई।।
प्रगट [redacted] मन्थन में ज्वाला।
जरत सुरासुर भये विहाला ।।
कीन्ह दया तहँ करी सहाई ।
नीलकंठ तब नाम कहाई ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा ।
जीत के लंक विभीषण दीन्हा ।।
सहस कमल में हो रहे धारी ।
कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी ।।
एक कमल प्रभु राखेउ जोई ।
कमल नयन पूजन चहँ सोई ।।
कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर ।
भये प्रसन्न दिये इच्छित वर ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जय जय जय अनन्त अविनाशी ।
करत कृपा सब के घटवासी ।।
दुष्ट सकल नित मेहि सतावै ।
भ्रमत रहे मोहि चैन न आवै ।।
त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारो ।
याहि अवसर मोहि आन उबारो ।।
लै त्रिशूल शत्रुन को मारो ।
संकट स मोहि आन उबारो ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मातु पिता भ्राता सब होई ।
संकट में पूछत नहिं कोई ।।
स्वामी एक आस तुम्हारी ।
आय हरहु अब संकट भारी ।।
धन निरधन को देत सदाहीं ।
जो कोई जांचे सो फल पाहीं ।।
अस्तुति केहि विधि करौं तुम्हारी ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्षमहु नाथ अब चुक हमारी ।।
शंकर हो संकट के नाशन ।।
मंगल कारण विघ्न विनाशन ।।
योगी यति मुनि ध्यान लगावै ।।
नारद शारद शीश नवावै ।।
नमो नमो जय नमो शिवाय ।।
सुर ब्रह्मादिक पार न पाय ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जो यह पाठ करे मन लाई ।
ता पर होत हैं शम्भु सहाई ।।
ऋनिया जो कोई हो अधिकारी ।
पाठ करे सो पावनहारी ।।
पुत्र हीन कर इच्छा कोई ।
निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई ।।
पण्डित त्र्योदशी को लावे ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ध्यान पूर्वक होम करावे ।।
त्रयोदशी ब्रत करे हमेशा ।
तन नहीं ताके रहे क्लेशा ।।
धूप दीप नैवैद्य चढ़ावे ।
शंकर सन्मुख पाठ सुनावे ।।
जन्म जन्म के पाप नसावे ।
अन्तवास शिवपुर में पावे ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कहत अयोध्या आस तुम्हारी ।
जानि सकल दुःख हरहु हमारी।।

!! दोहा !!

नित्त नेम कर प्रातः ही, पाठ करौ चालीस।
तुम मेरी मनोकामना, पूर्ण करो जगदीश ।।
मग्सर छठि हेमन्त ऋतु संवत् चौंसठ जान्।
अस्तुति चालीसा शिवर्हि पूर्णकीन कल्याण।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शिव नामावली

ॐ महादेव शिव शंकर शंभो उमाकान्त हर त्रिपूरारे।
मृत्युन्जय वृष्भध्वज शुलिन, गगाधर मृड मदनारे ।
हर शिव शंकर गौरीशंकर, वन्दे गंगाधर मीशम् ।
रुद्र पशुपति मीशान, कलये काशीपूरनाथ ।
जय शंभो जय शंभो, शिव गौरीशंकर जय शंभो ।
जय शंभो जय शंभो, शिव गौरीशंकर जय शंभो ।
हर हर महादेव शंभो, काशी विश्वनाथ गंगे ।
हर हर महादेव शंभो, काशी विश्वनाथ गंगे ।
काशी विश्वनाथ गंगे, काशी अमरनाथ गंगे ।
हर हर महादेव शंभो, काशी विश्वनाथ गंगे ।
ॐ नम्: पार्वतोपते, हर - हर - हर - हर महादेव।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

त्रिगुणा आरती शिव जी की

ॐ जय शिव ओंकारा शिव हर भज ओंकारा ।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव भोले नाथ महादेव अर्धागो गोरा।।
एकानन चतुरानन पंचानन राजे, शिव पंचानन राजे ।
हंसासन गरुड़ासन-वृष वाहन साजे ।।
दो भुज चार चतुर्भुज दशभुज त्वम् सोहें ।
तीनों रुप निरखता त्रिभुवन जन मोहे ।।
अक्षामाला वनमाला मुँडमाला धारो ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

त्रिपुरारी है मुरारी कर-कमला धारी ।
श्वेतांबर पीताम्बर बाघम्बर अंगे ।।
सनकादिक प्रभुतादिक भुतादिक संगे।
करमध्ये कमंढलु चक्र त्रिशुल धरतां।।
युग करता युग भरता जग पालन करता।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रण्वाक्षर के मध्ये ये तीनों एका ।
लक्ष्मी और सावित्री पार्वती संगे ।।
गायत्री अर्धांगी शिव गौरी सँगे ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

काशीमें विश्वनाथ विराजत नन्दाब्रह्मचारी।
नित उठ दर्शन पावत महिमा अति भारी।।
त्रिगुणानन्द जी की आरती निसदिनजो गावे।
भजत शिवानन्द स्वामी वांछित फल पावे।।

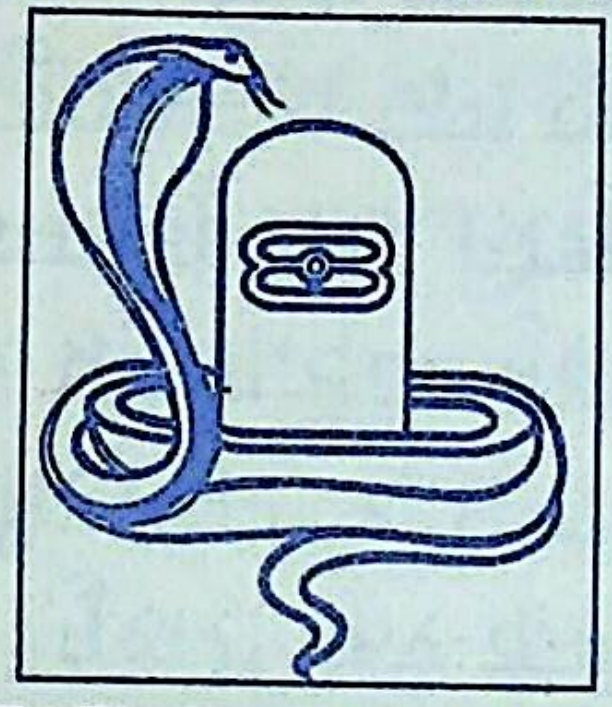

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सुरेन्द्र शर्मा
98156-03586
भारद्वाज स्टील्ज़
मंडी गोबिन्दगढ़-147 301 (पंजाब)

प्रकाशक :
महन्त गंगा पुरी जी महाराज
श्री पंचायती अखाड़ा महानिर्वाणी (पंजीकृत)
श्री संगमेश्वर महादेव मन्दिर, अरण्याय
पिहोवा (कुरुक्षेत्र), फोन नं: 220067

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ नमः शिवाय ॥

श्री कलेशपति महादेव के साक्षात दर्शन

मुद्रक

पाल जी प्रिंटिंग प्रैस

मोतीया खान, मंडी गोविन्दगढ़ (पंजाब), मोबाईल : 98152-45196